Poonam Shodh Rachna (ISSN 2456-5563)
(A multidisciplinary, peer reviewed and refereed Research Journal)
Vol. 2, Issue.7, July 2023, PSR-2307001

शासकीय महाविद्यालयों में ई–लाइब्रेरी के संचालन में आ रही असुविधाओं का एक समीक्षात्मक अध्ययन (मध्य प्रदेश के सन्दर्भ में)

शोधार्थी
दीपिका त्रिपाठी
(एम.लिब, एम.फिल, पुस्तकालय विज्ञान)

शोध निर्देशक
डॉ. डी.वी. सिंह (असि. प्रो. पुस्तकालय विज्ञान
स्वामी विवेकानंद युनिवर्सिटी सागर)

प्रस्तावना

21वीं सदी तकनीकी विकास की सदी है। विगत कुछ वर्षों से तकनीकी क्रान्ति के कारण सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिले हैं। इस तकनीकी युग में मुख्य रूप से संचार क्रान्ति आई है जिसने व्यक्ति के जीवन तथा उसकी अनेक आवश्यकताओं को सुगम, सरल बनाने की दिशा में कार्य किया है। आज हम 5–जी के युग में प्रवेश कर चुके हैं इस कारण हमारी संचार सुविधाएँ और सशक्त होकर सामने आई हैं। कम्प्यूटर, इंटरनेट, लैपटॉप, टैबलेट, एन्ड्राइड फोन की सहायता से विश्व के दुर्गम वस्तुओं को अपने समीप प्राप्त करने में सफलता पाई है। अन्य क्षेत्रों के साथ ही साथ पुस्तकालयों के क्षेत्र में भी इस संचार क्रान्ति का प्रभाव दिखाई देने लगा है। इस प्रभाव को हम सामान्य भाषा में ई–लाइब्रेरी की संज्ञा देते हैं। निश्चित रूप से साहित्य, विज्ञान, कला, कानून, वाणिज्य, सामान्य ज्ञान, लोक साहित्य तथा विषय वस्तु का ज्ञान जो अभी तक हमें मात्र पुस्तकों से मिलता था वह ई–लाइब्रेरी की सुविधा से किसी भी समय हमारे इच्छा के अनुसार हमें अध्ययन हेतु ई–लाइब्रेरी सुविधा से सुलभ है।

उद्देश्य :–

1. अध्ययन क्षेत्र में संचालित पुस्तकालयों के ई–लाइब्रेरी पुस्तकालयों के रूप में उन्नयन की वास्तविक स्थिति पता लगाना।
2. इस क्षेत्र में र्वसुविधायुक्त ई–लाइब्रेरी के निर्माण में आने वाली बाधाओं की जानकारी प्राप्त कर इसे दूर करने के उपायों की जानकारी प्रदत्त करना।

परिकल्पना :–

1. अध्ययन क्षेत्र में ई–लाइब्रेरी की संकल्पना के संबंध में महाविद्यालय में पदस्थ पुस्तकालय प्रभारी को अधिक जानकारी नहीं है।
2. महाविद्यालयों के पुस्तकालयों में ई–लाइब्रेरी से संबंधित सुविधाओं का आभाव है।

पुस्तक शोध पत्र में एक शोधार्थी के रूप में मैने ई–लाइब्रेरी की वास्तविक स्थिति जो मध्यप्रदेश के शासकीय महाविद्यालयों के पुस्तकालयों में सुलभ है के सम्बन्ध में समीक्षा कर इस स्थिति को जन सामान्य से परिचित कराने का प्रयास किया है। इसमें मुख्य चर्चा इन महाविद्यालयों में ई–लाइब्रेरी के संचालन में आने वाली असुविधाओं का वर्णन करना है।

पहुँच की गति :– ई–लाइब्रेरी संसाधनों तक त्वरित पहुँच की सुविधा प्रदान करती है किन्तु पहुँच की गति विभिन्न कारको से बाधित होते हैं। जिसके अंतर्गत धीमें इंटरनेट कनेक्शन, सर्वर की भीड़ या पीक समय के दौरान उच्च मांग के परिणाम स्वरूप सामग्री प्राप्त करने या डाउनलोड करने में अवरोध उत्पन्न होना। जिसके कारण सूचना प्राप्ति को बाधित करता है।

प्ररंभिक लागत अधिक :– डिजिटल लाइब्रेरी स्थापित करने के लिए हार्डवेयर, साफ्टवेयर, डिजिटल संरक्षण प्रणाली और स्टॉफ प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण अग्रिम निवेश की आवश्यकता होती है। प्रिंट सामग्री को डिजिटाइज करने, मेटाडेटा बनाने और उपयोगकर्ता इंटरफेस विकसित करने की लागत काफी अधिक होती है। ये प्रारंभिक लागते सीमित वित्तीय संसाधनों वाले छोटे महाविद्यालयों तथा ग्रामीणांचल महाविद्यालयों के लिए एक चुनौती पैदा कर रहा है जिससे व्यापक डिजिटल लाइब्रेरी संग्रह स्थापित करने की क्षमता में असुविधा उत्पन्न हो रही है।

बैंडविड्थ :– डिजिटल लाइब्रेरी संसाधनों तक पहुँचते समय बैंडविड्थ सीमाएँ एक महत्वपूर्ण चुनौती उत्पन्न करती हैं विशेष रूप से सीमित इंटरनेट कनेक्टिविटी वाले क्षेत्रों में या उन क्षेत्रों में जहाँ बैंडविड्थ प्रतिबंधित है। उन उपयोग कर्ताओं के लिए एक समस्या की स्थिति बन जाती है। बड़ी फाइलों, मल्टीमीडिया सामग्री या उच्च रिजाल्यूशन सामग्री काफी का उपभोग करती हैं जिससे लोडिंग समय धीमा हो जाता है बफरिंग जैसी समस्याएँ होती हैं या यह भी कह सकते हैं कि कम बैंडविड्थ कनेक्शन वाले महाविद्यालयों के लिए पूरी तरह असुविधा हो जाती है।

लाइट की उपलब्धता न होना :– प्रदेश के मुख्य रूप से ग्रामीणांचलों में विद्युत की उपलब्धता की स्थिति असंतोषजनक है। प्रत्येक दिवस इन क्षेत्रों में 08 से 12 घंटे की विद्युत कटौती तथा अन्य समय लो वोल्टेज की समस्या आम बात है। इस कारण इन क्षेत्रों में ई–लाइब्रेरी की उपयोगिता प्रासंगिक नहीं है।

राज्य एवं जिला मुख्यालय में ई–लाइब्रेरी नियंत्रण कक्ष का आभाव :– पुस्तकों तथा सहित्यों का नित नवीन प्रकाशन हो रहा है। इन नवीन संरचनाओं के अध्ययन के लिए ई–लाइब्रेरिओं आ अपडेट होना आवश्यक है जिसका प्रमुख उत्तरदायित्व राज्य एवं जिला में स्थित अग्रणी महाविद्यालयों के पुस्तकालय में नियंत्रण कक्ष के द्वारा ही संभव है। वर्तमान में प्रदेश में इस स्तर के नियंत्रण कक्ष या तो निष्क्रिय है

अथवा इनमें अपडेट करने की स्थिति बहुत पिछड़ी हुई है। इस कारण जिले के ग्रामीणांचलों के महाविद्यालयों में यह सुविधा सुलभ नहीं हो पा रही है।

प्रदेश के ग्रन्थालयों में पदस्थ प्रभारियों का ई–लाइब्रेरी के संचालन के प्रति अप्रशिक्षित होना :– मध्य प्रदेश के अधिकांश पुस्तकालयों में पदस्थ प्रभारी पुस्तकालय विज्ञान की सामान्य अकादमिक योग्यता धारी हैं। इन्हें सूचना तकनीकी से संबंधित विशेष जानकारी नहीं है। इस कारण ई–लाइब्रेरी के प्रत्येक चरण की समझ व उनके संचालन में निरंतर कठिनाई आ रही है। आवश्यकता इस बात की है कि इन प्रभारियों को तकनीकी सुविधा युक्त केन्द्र में आमंत्रित कर लघु या मध्यम अवधि के ई–लाइब्रेरी संचालन का प्रशिक्षण किया जाए तथा हर दो वर्षों के अंतराल में इन प्रशिक्षणों की पुरनावृत्ति की जाए।

प्रत्येक पुस्तकालयों में कम्प्यूटर डाटा फीड करने वाले सहायकों की पदस्थापना न होनाः– मध्यप्रदेश के लगभग 90 से 95 प्रतिशत शासकीय महाविद्यालयाकें में पुस्तकालयों में डाटा ऑपरेटर जो मुख्य रूप से तकनीकी ज्ञान से युक्त होता है की पद स्थापना ही नहीं है। पुस्तकालय प्रभारी का तकनीकी विषय में अप्रतिशत होना तथा पुस्तकालय के अन्य अधिकांश कार्यों में व्यस्त रहने के कारण आदर्श ई–लाइब्रेरी का संचालन लगभग संभव नहीं है इसलिए कुशल डाटा ऑपरेटर प्रत्येक पुस्तकालयों मे पदस्थ किये जायें जो ई–लाइब्रेरी की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के उत्तरदायी हों।

ई–लाइब्रेरी सुविधा के उपभोग हेतु शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में ज्ञान का आभाव :–

ई–लाइब्रेरी हमारे देश में एक नवीन परिकल्पना है निःसंदेह पुस्तकालयों का ई–पुस्तकालयों के रूप में विकसित होना बहुत अच्छी बात है लेकिन इसके उपयोग–उपभोग, गुण–दोष तथा नवाचार के प्रति न केवल विद्यार्थी वरन् महाविद्यालयों में पदस्थ शिक्षक भी पूर्णतयः भिज्ञ नहीं हैं। इस कारण उनमें ई–लाइब्रेरी के उपयोग के प्रति बहुत रुचि नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि ई–लाइब्रेरी के उपयोग और इसके महत्व को उचित रूप से प्रचारित और प्रसारित किया जाए।

प्रदेश के अधिकांश महाविद्यालयों में संचालित पुस्तकालयों में पुस्तके ही अध्ययन के स्रोतः–

शोधार्थी एक पुस्तकालय अध्यक्ष के रूप में अभी भी इस बात से पूर्ण सहमत हैं कि पुस्तकालय में अध्ययन के लिए किसी विषय विशेष की पुस्तकें ही शिक्षकों व छात्रों के द्वारा मांगी जाती हैं। महाविद्यालयों में विशेष प्रशिक्षण शिविर लगाकर अध्ययन कर्ताओं को ई–पुस्तकालय का महत्व व उसके उपयोग की विधा की जानकारी दी जानी चाहिए।

ई. पुस्तकालय के निर्माण हेतु वित्तीय सहायता का आभाव :– मध्यप्रदेश शासन के दूरस्थांचलों में शैक्षिक सुविधा बढ़ाने के लिए प्रति वर्ष अनेक महाविद्यालयों की स्थापना की जा रही है लेकिन ये समस्त नवीन महाविद्यालय प्रत्येक प्रकार की सुविधा से वंचित हैं। ऐसी स्थिति में ई–लइाब्रेरी की महाविद्यालयाकें में

परिकल्पना कैसे की जा सकती है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि संस्थाएं कम खोली जाएं तथा जो भी संस्थाएं हो उन्हें पूर्ण रूप वित्त पोषित करके सुविधा युक्त एवं आकर्षक बनाया जाए।

सन्दर्भः–

1) Jack D. Glazier and Ronald R. Powell eds (1992), Qualitative reserach in Information Management.
2) Mary Jo Lynch (1984). Research and Librarianship. An easy connection library.
3) Herbert Goldhor (1972). An Introduction to scienctific research librarianship.
4) https://www.geekstorgeeks.org. 13 May-2023
5) National digital library, December 23, 2014, from http://deity.gov.in/content/national-digital library.
6) News report.